Azim Premji University

Where have all our *gunda thopes* gone?

A meeting of old friends Vrikshbaba and Lakshmi

कहाँ गई हमारी वन-वाटिकाएँ?

पुराने दोस्त वृक्षबाबा और लक्ष्मी की मुलाक़ात

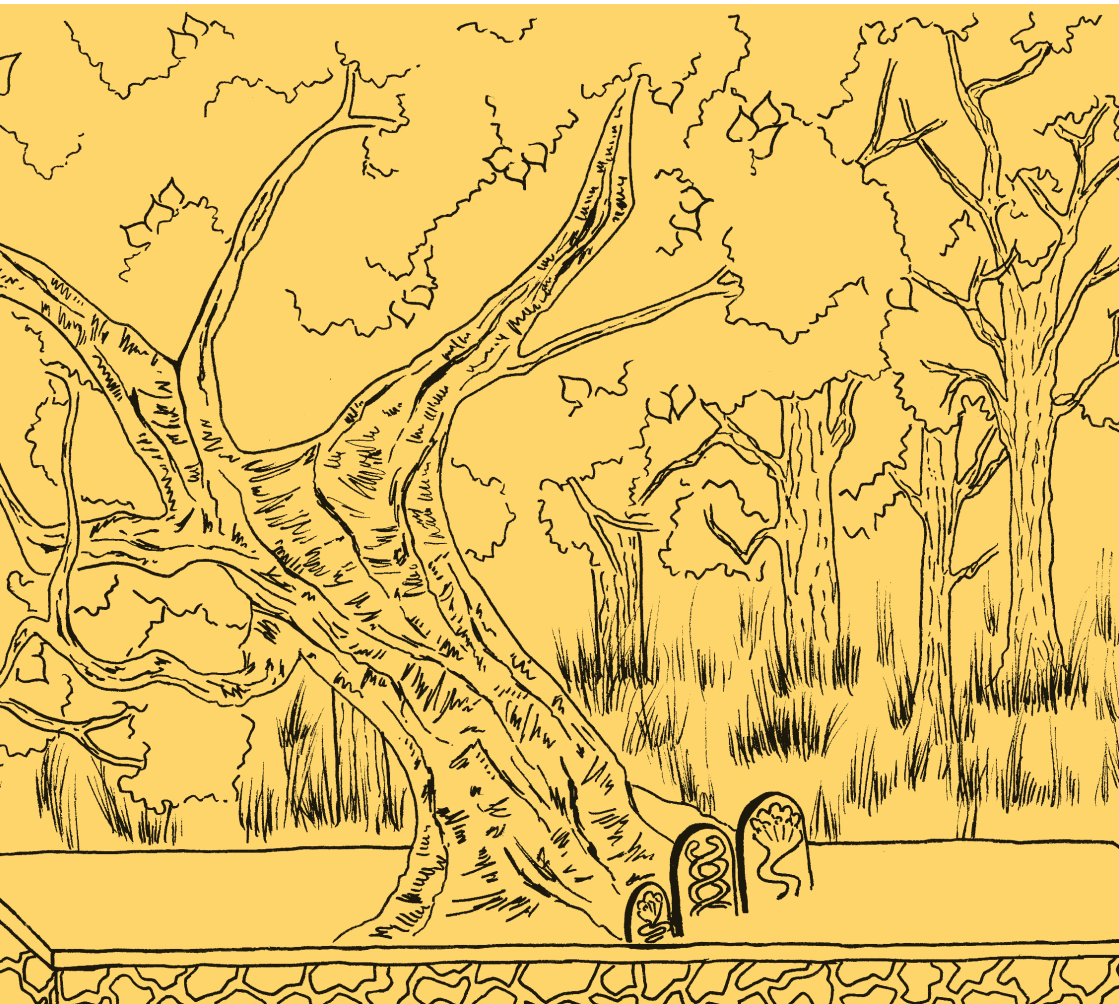

May 2021 | मई 2021

Illustration: Neeharika Verma, Sukanya Basu, Sahana Subramanian

Story: Seema Mundoli and Harini Nagendra

Story translation (Hindi): Sushil Joshi
Editing (Hindi): Rajesh Utsahi

Neeharika Verma (2017-20) and Sahana Subramanian (2016-19) are undergraduate students, and Sukanya Basu, Seema Mundoli and Harini Nagendra are researchers at Azim Premji University. Sushil Joshi is an independent translator. He is also the editor of Eklavya Foundation's science and technology magazine "Srote" in Madhya Pradesh. He has a keen interest in education, development, environment and translation of science subjects. Rajesh Utsahi is the Hindi editor of Azim Premji University's "Translation Initiative" programme.

Layout Design : Kshiraja Krishnan, Krithika Santhosh Kumar, and Tejas Pande

---

चित्रांकन : नीहारिका वर्मा, सुकन्या बसु, सहाना सुब्रमण्यन

कथा : सीमा मुंडोली और हरिणी नागेन्द्रा

कथा अनुवाद (हिन्दी) : सुशील जोशी
सम्पादन (हिन्दी) : राजेश उत्साही

नीहारिका वर्मा (2017-20) और सहाना सुब्रमण्यन (2016-19) स्नातक विद्यार्थी हैं तथा सुकन्या बसु, सीमा मुंडोली और हरिणी नागेन्द्रा अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में शोधकर्ता हैं।
सुशील जोशी स्वतंत्र अनुवादक हैं। वे मप्र में एकलव्य फाउण्डेशन की विज्ञान एवं तकनॉलॉजी पत्रिका "स्रोत" के सम्पादक हैं। शिक्षा,विकास,पर्यावरण तथा विज्ञान विषयों के अनुवाद में उनकी गहरी रुचि है। राजेश उत्साही अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के "अनुवाद पहल" कार्यक्रम में हिन्दी सम्पादक हैं।

लेआउट डिज़ाइन : क्षीरजा कृष्णन, कृतिका संतोष कुमार और तेजस पांडे।

The story of this story...

Our research on the *gunda thopes* of Bengaluru has been published in reports, academic journals and newspapers. It has also been used as a teaching case study for PG students of M.A. Development at Azim Premji University. One of the questions we have asked ourselves is:

"How can we communicate our research to a wider public, and partner with them in protecting the city's environment?"

This illustrated story on *gunda thopes* is our small attempt to do just that.

India is rapidly urbanising, but our cities are facing an environmental crisis. Whenever there is any development, for building a road, a flyover or a metro, the first casualties are trees.

इस कहानी की कथा...

बेंगलूरु की वन-वाटिकाओं (स्थानीय भाषा में इन्हें गुण्डा थोप कहा जाता है) पर हमारा शोध विभिन्न रिपोर्ट्स, अकादमिक पत्रिकाओं और अख़बारों में प्रकाशित हुआ है। इसका उपयोग अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में एमए विकास के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के साथ एक अध्यापन केस स्टडी के तौर पर भी किया गया है। हम ख़ुद से एक सवाल पूछते रहे हैं :

“हम अपने शोध को आम लोगों तक कैसे विमोचन करें और शहर के पर्यावरण को बचाने में उनके साथ कैसे सहयोग करें?”

वन-वाटिकाओं की यह चित्रित कथा इसी दिशा में एक छोटा-सा प्रयास है। भारत का तेज़ी से शहरीकरण हो रहा है, लेकिन हमारे शहर पर्यावरणीय संकट का सामना कर रहे हैं। जहाँ कहीं विकास होता है, सड़कें बनाने के लिए, पुल या मेट्रो बनाने के लिए, तो पहली क़ुर्बानी पेड़ों की ली जाती है।

Trees are our city's lungs, cleaning the air of dust and toxic fumes from vehicles and industries.

Trees are a source of food, fuelwood and medicines, especially for the urban poor, and a source of shade in the hottest days to all. The very presence of trees helps us deal with the stress of city life. For many of us, trees are also of cultural and sacred significance.

When trees in cities are cut to make way for urban projects, we also lose the many services that trees provide. But more importantly, what we and our future generations lose forever is a connect to nature, and a way of living that encompasses trees as living beings—neighbours, friends, and spiritual guides.

This is a fictitious story. But the village, which remains unnamed, exists just as it is described in the outskirts of Bengaluru. The *thope* exists too. All the elements of the story are drawn from our conversations with the village residents. This story may be a story of a *thope* in Bengaluru. But across cities in India, there are wooded groves that are facing similar threats as a result of urbanisation.

Finally, this may be a story of loss—the loss of nature as a city expands. We also hope that the story will fuel an urge for us to get to know more about nature in our neighbourhood. We hope that each of you who read this book will be enriched by the understanding of trees and *thopes*—sentinels and companions in the cities we live in.

पेड़ हमारे शहरों में फेफड़े का काम करते हैं। वे हवा को धूल तथा वाहनों और उद्योगों से निकलते धुएँ से मुक्त करते हैं।

पेड़ फल, जलाऊ लकड़ी और औषधि के स्रोत हैं, ख़ास तौर से शहर के ग़रीबों के लिए। वे तपते दिनों में सबको छाया भी देते हैं। पेड़ों की उपस्थिति मात्र से हमें शहरी आपाधापी के तनाव से निपटने में मदद मिलती है। हममें से कई लोगों के लिए तो पेड़ों का सांस्कृतिक व धार्मिक महत्त्व भी है।

जब शहर की परियोजनाओं के निर्माण के लिए पेड़ काटे जाते हैं, तो हम उन सेवाओं से भी हाथ धो बैठते हैं, जो पेड़ प्रदान करते हैं। इससे भी ज़्यादा गम्भीर बात यह है कि हम और हमारी भावी पीढ़ियाँ प्रकृति से जुड़ाव और एक ऐसी जीवन शैली गँवा देती हैं जिसमें पेड़ जीते-जागते पड़ोसियों, दोस्तों और आध्यात्मिक पथ-प्रदर्शकों के रूप में शामिल हैं।

यह एक काल्पनिक कथा है। लेकिन बेंगलूरु की सरहद पर वह अनाम गाँव ठीक वैसा ही है जैसा कि यहाँ चित्रित किया गया है। वाटिकाओं का अस्तित्व भी है। कहानी के सारे तत्व गाँव के निवासी के साथ हुई हमारी बातचीत से लिए गए हैं। यह कथा बेंगलूरु की एक वन-वाटिका की हो सकती है। लेकिन भारत के तमाम शहरों के ऐसे वृक्षकुंज, जिनमें कुछ अलग तरह के पेड़ हो सकते हैं, शहरीकरण के ऐसे ही ख़तरों का सामना कर रहे हैं।

और अन्तिम बात...हो सकता है आपको लगे कि यह कहानी क्षति की कहानी है—शहर के फैलने के साथ प्रकृति की क्षति। हम उम्मीद करते हैं कि यह कहानी हमें अपने आसपास की प्रकृति के बारे में और जानने में मदद करेगी। हमें उम्मीद है कि आपमें से जो भी इस कहानी को पढ़ेंगे, पेड़ों और वाटिकाओं — शहरों में हमारे प्रहरी और साथी— की समझ उन्हें और समृद्ध करेगी।

Lakshmi and the *thope*

Lakshmi is visiting her childhood home after many years.

She had left her village, located in the outskirts of Bengaluru city, as a young bride of eighteen. After her marriage she lived in a crowded slum in the city with her husband, who worked as a mason, and her in-laws.

Lakshmi had very few opportunities to visit her village since she left. Life in the city had not been easy. She had been busy taking care of her family, raising her children, and working as a domestic help in several houses to make ends meet.

Now in her fifties, Lakshmi, who had last been to her village nearly 10 years ago, had come for a short visit. But she had returned to find that the village looked very different—a little like the city itself from where she had just arrived—with offices, apartments, layouts and shops selling all kinds of items.

लक्ष्मी और वाटिका

लक्ष्मी बरसों बाद अपने बचपन के घर आई है। उसने बेंगलूरु की सरहद पर बसा अपना गाँव अट्ठारह वर्ष की उम्र में दुल्हन बनकर छोड़ा था। विवाह के बाद वह अपने पति और ससुराल वालों के साथ शहर की एक भीड़भाड़ वाली झुग्गी बस्ती में रहती है। पति मिस्त्री है। शहर आने के बाद लक्ष्मी को मायके जाने के ज़्यादा मौक़े नहीं मिले। शहर में जीवन आसान नहीं रहा था। वह अपने परिवार को सम्भालने और बच्चों की परवरिश के साथ-साथ कुछ घरों में बाई का काम भी करती है।

लक्ष्मी की उम्र पचास पार कर चुकी हैं। आख़िरी बार वह अपने गाँव क़रीब दस साल पहले आई थी। इस बार वह कुछ दिनों के लिए गाँव आई है। लेकिन यहाँ पहुँचकर उसने देखा कि गाँव बहुत बदल गया है—थोड़ा-थोड़ा उसके शहर जैसा दिखने लगा है—कार्यालय, अपार्टमेंट्स, कॉलोनियाँ और दुकानें जहाँ तमाम चीज़ें बिकती हैं।

The evening she arrived at her village, Lakshmi went for a walk on a familiar path—a path she had often taken as a child while herding her goats. The path took her from her house, through the centre of the village, beside the *kalyani*[1] with its peepul tree.

शाम के समय वह अपने जाने-पहचाने रास्ते पर घूमने निकल पड़ी—वही रास्ता जहाँ वह बचपन में बकरियों को चराने ले जाया करती थी। यह रास्ता उसके घर से गाँव के बीच से होते हुए पीपल के पेड़ वाली बावड़ी तक जाता था।

Lakshmi's final destination on this walk was the *gunda thope*[2], located at one end of the village. Under the shade of the trees in the *thope*, Lakshmi had spent many happy hours as a child.

As Lakshmi walked towards the *thope*, she gazed around the village. The village she remembered from her childhood was so different—a village she had thought to be timeless and unchanging. Her grandfather had told many stories of her village, and how old it was.

इस यात्रा में लक्ष्मी की मंज़िल वन-वाटिका थी। यह गाँव के एक छोर पर स्थित है।

वाटिका के पेड़ों की छाया में लक्ष्मी ने बचपन में घंटो व्यतीत किए थे। वाटिका की ओर बढ़ते हुए, लक्ष्मी ने गाँव में इधर-उधर नज़रें दौड़ाईं। बचपन का जो गाँव उसे याद था, वह बहुत अलग था—उसे लगता था कि वह गाँव समय से परे है, कभी नहीं बदलेगा। उसके दादा ने उसे गाँव के बारे में कई क़िस्से सुनाए थे और बताया था कि गाँव कितना पुराना है।

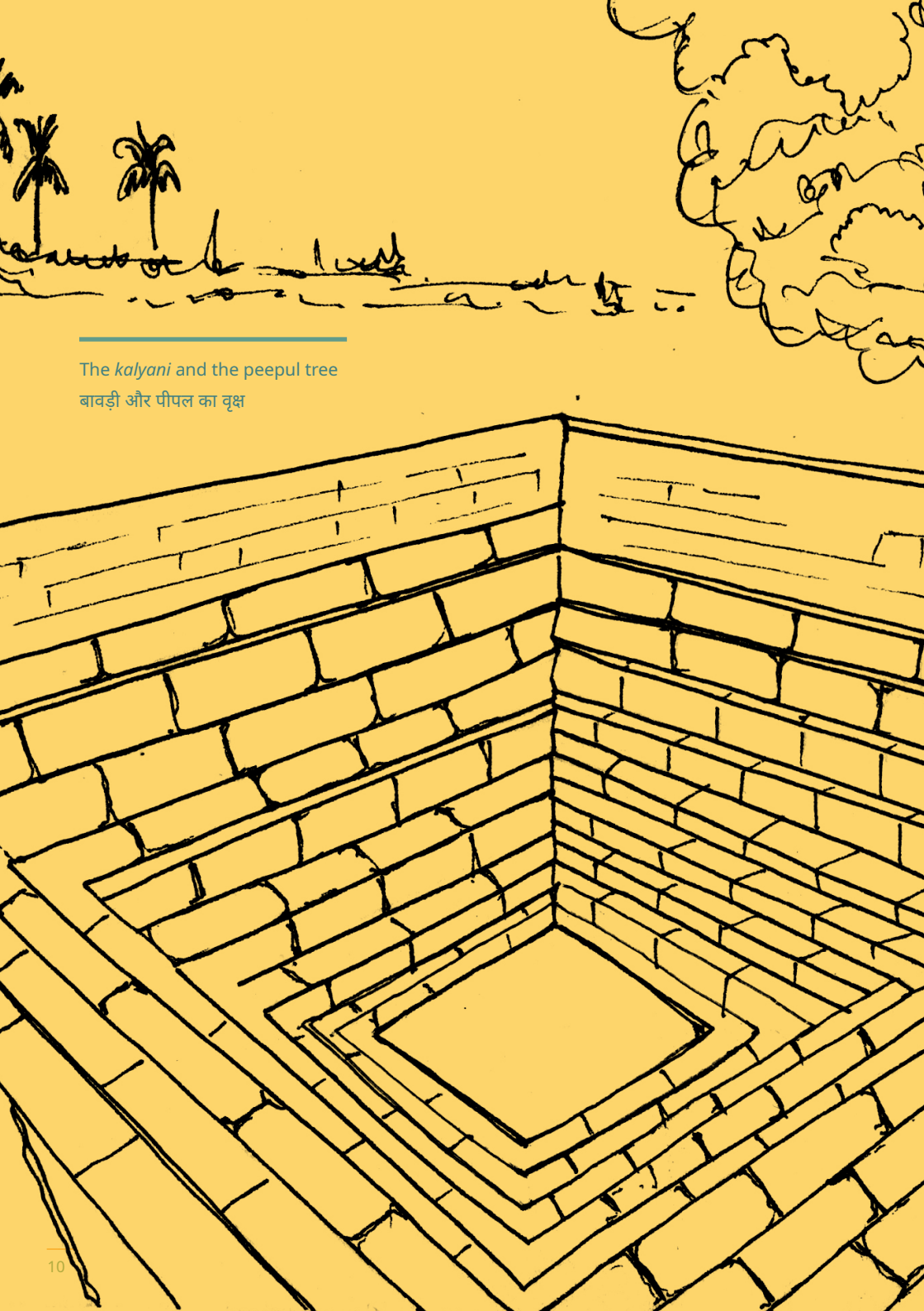

The *kalyani* and the peepul tree
बावड़ी और पीपल का वृक्ष

According to a legend, the *Pandavas*, the five brothers from the epic *Mahabharatha*, had halted at this village during their exile. One day while waiting for their pot of rice to cook, the *Pandavas* cut and moved huge blocks of stone to build the village temple. To pass their time, the Pandavas, built the lake, the bund and the *kodi*[3]. Still waiting for the rice to cook they played a game of *anchankal*[4] with boulders on the lake bed. These boulders could still be seen in summer when the lake was dry.

एक दन्तकथा के अनुसार पांडव (महाकाव्य महाभारत के पाँच भाई) अपने वनवास के दौरान इस गाँव में रुके थे। एक दिन अपनी हाँडी में चावल पकने की प्रतीक्षा करते हुए, पांडव गाँव का मन्दिर बनाने के लिए बड़े-बड़े पत्थर काटकर ले आए। समय बिताने के लिए उन्होंने तालाब बनाया, बंधान और निकास (कोडी) बनाए। चावल पकने का और इंतज़ार करते हुए पांडवों ने तालाब में पड़े पत्थरों से पाँचे खेले। जब गर्मियों में तालाब सूखता है तो ये पत्थर आज भी देखे जा सकते हैं।

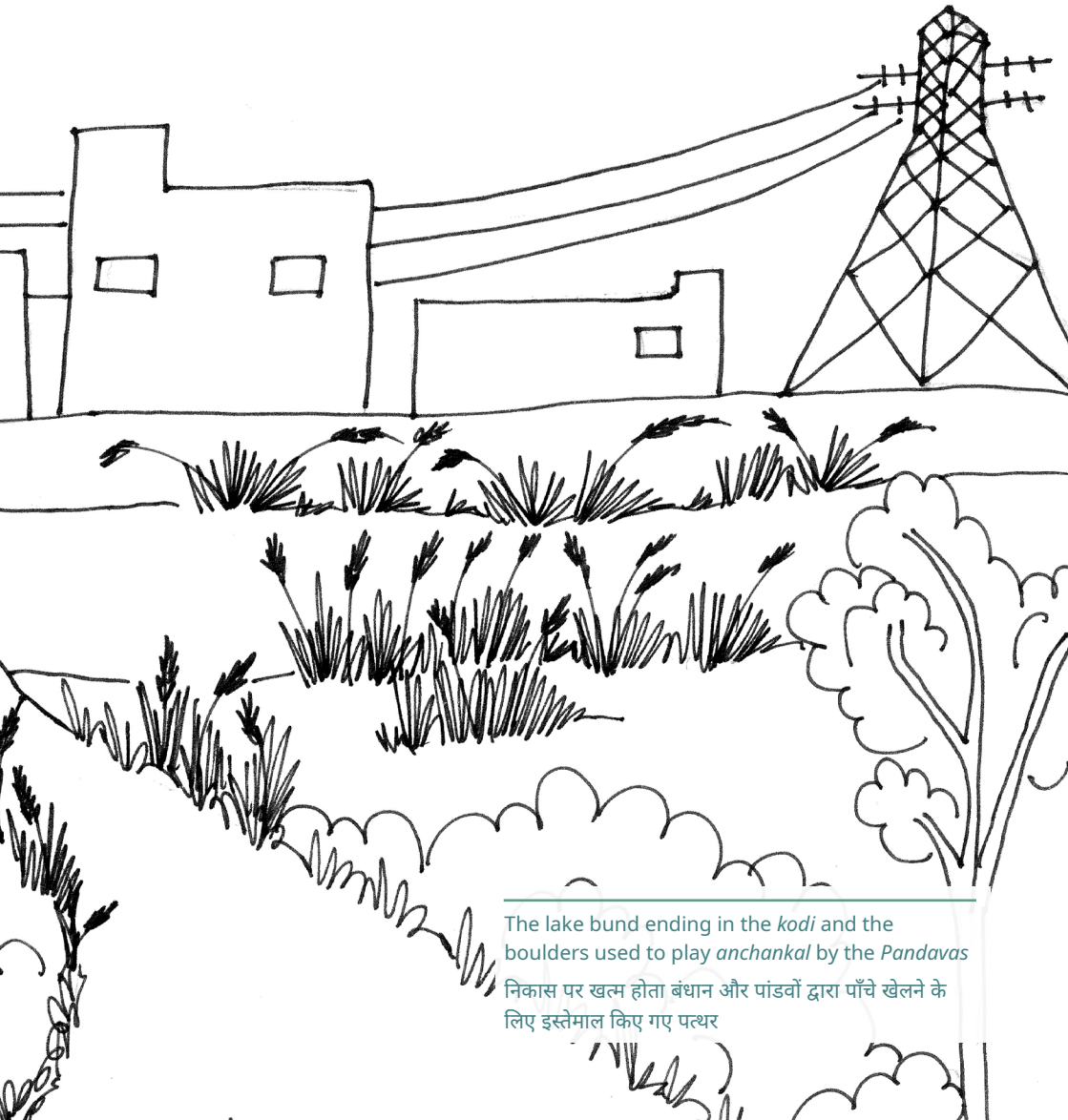

The lake bund ending in the *kodi* and the boulders used to play *anchankal* by the *Pandavas*

निकास पर खत्म होता बंधान और पांडवों द्वारा पाँचे खेलने के लिए इस्तेमाल किए गए पत्थर

Lost in thought, Lakshmi suddenly realised that she had arrived at the *thope*, or what she realised, in shock, had once been the *thope*.

The *thope* she remembered did not have either a gate or a fence. It had also looked like a forest with trees—towering mango and jamun that her grandfather had told her were more than 200 years old. When she entered the *thope*, she saw that it had become a park, like the parks she had seen in the city. Now the *thope* was fenced with barbed wire, and entry was through a wrought iron gate.

Even more shocking to Lakshmi was that she could hardly see any of the old trees. In the park near her home, there were trees that people called royal palms. These trees looked a little like coconut trees. Unlike the coconut though, the leaves of the royal palm were of little use, and neither did the tree bear any useful fruit.

She saw paved footpaths crisscrossing the park, an open hall in the centre, and a number of cement benches. Lakshmi also saw some strange looking machines where three thick trunked mango trees had stood. (She later found that people used them for exercising). There were ornamental plants where the *yakka*[5] had grown wild. The undergrowth her goats had loved to graze on was replaced by lawn grass. Everything looked neat, and in place—and very strange.

Recovering from her initial shock, Lakshmi noticed a majestic looking peepul tree, and the sight of the tree gladdened her.

सोच में मगन लक्ष्मी को अचानक लगा कि वाटिका आ गई है। वास्तव में उसे भान यह हुआ था कि वह वहाँ पहुँच गई है जहाँ कभी वाटिका हुआ करती थी।

जो वाटिका उसे याद थी उसमें न तो कोई फाटक था और न ही कोई घेरे। वह पेड़ों के एक झुरमुट जैसी दिखती थी—ऊँचे-ऊँचे आम और जामुन के पेड़, जिनके बारे में दादा ने बताया था कि वे 200 साल पुराने थे। वाटिका में जाकर उसने देखा कि अब वह एक वैसा ही उद्यान है, जैसे उद्यान उसने शहर में देखे हैं। वाटिका के आसपास कंटीले तारों की बागड़ भी लगी थी और अन्दर जाने का रास्ता लोहे के एक दरवाज़े से होकर जाता है। लक्ष्मी के लिए ज़्यादा हैरानी की बात तो यह थी कि पुराने पेड़ कहीं नज़र नहीं आ रहे थे। बेंगलूरु में उसके घर के पास के बगीचे में कुछ पेड़ थे जिन्हें लोग रॉयल पाम कहते हैं। ये नारियल के पेड़ों जैसे दिखते हैं। नारियल के पेड़ों के विपरीत रॉयल पाम की पत्तियाँ किसी काम नहीं आतीं और न ही उन पर कोई उपयोगी फल लगते हैं।

उसने देखा कि उद्यान में पक्की पगडण्डियाँ बनी हैं, बीच में एक खुला हॉल है और कई सारी सीमेन्ट की बेन्च लगी हैं। लक्ष्मी ने कुछ अजीबोग़रीब मशीनें भी देखीं, जहाँ पहले मोटे-मोटे तनों वाले आम के पेड़ हुआ करते थे। (उसे बाद में पता चला कि लोग इन मशीनों का उपयोग व्यायाम के लिए करते हैं।) जिस जगह एक समय जंगली अकाव उगा करते थे, वहाँ अब सजावटी पौधे लगे थे। जिस घास को उसकी बकरियाँ चाव से चरती थीं, उसकी जगह अब लॉन वाली घास लगी थी। सब कुछ एकदम साफ़-सुथरा और व्यवस्थित था लेकिन अजीब लग रहा था।

शुरुआती हैरानी से उबरकर, लक्ष्मी ने एक शानदार पीपल का पेड़ देखा और ख़ुश हो गई।

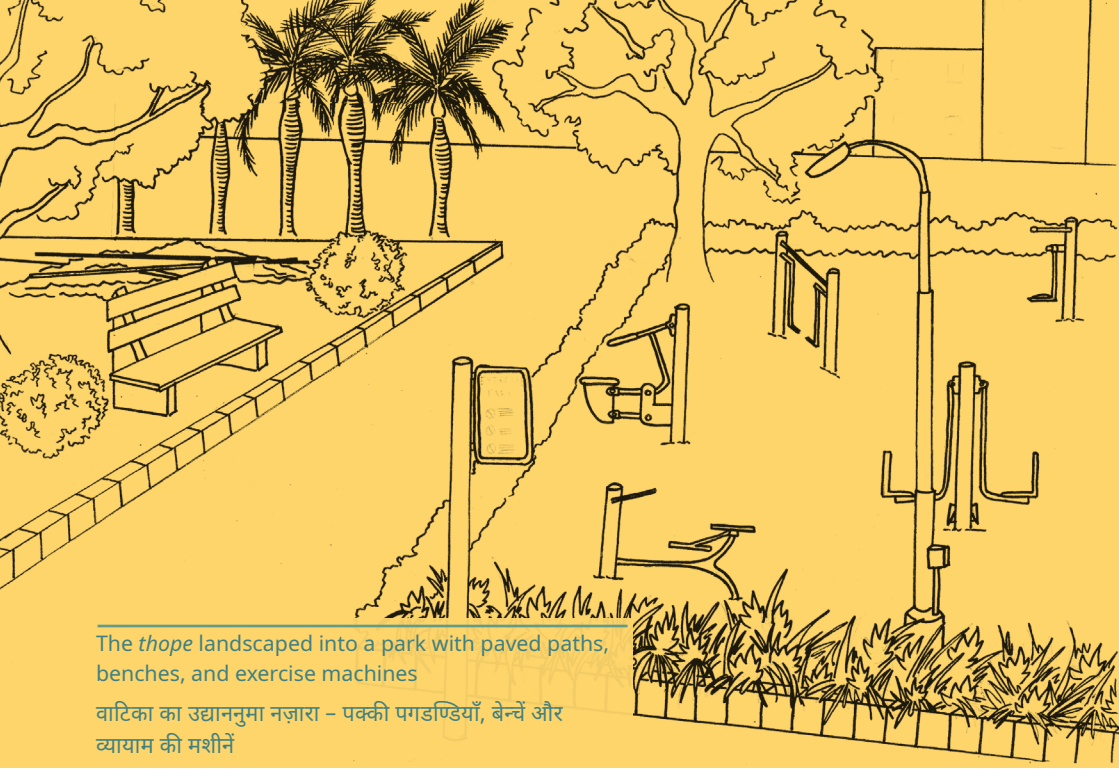

The *thope* landscaped into a park with paved paths, benches, and exercise machines

वाटिका का उद्याननुमा नज़ारा – पक्की पगडण्डियाँ, बेन्चें और व्यायाम की मशीनें

The peepul tree stood on a *katte*[6]. At the base of the tree were *nagarkallus*[7]. This was a familiar tree to Lakshmi. She had spent many hours under the shade of the peepul, sometimes in silence, and at other times chattering to the tree about things of great importance to a child.

"Vrikshbaba", she had fondly called the tree.

पीपल का पेड़ एक चबूतरे पर था। पेड़ के नीचे पत्थर थे जिन पर आकृतियाँ उकेरी हुईं थीं। यह लक्ष्मी का जाना-पहचाना पेड़ था। उसने पीपल की छाया में घण्टों बिताए थे, कई बार चुपचाप तो कभी-कभी पेड़ से उन चीज़ों के बारे में बातें करते हुए जो किसी बच्चे के लिए महत्त्वपूर्ण होती हैं।

"वृक्षबाबा", वह पेड़ को प्यार से पुकारती थी।

Standing under the tree, she heard the rustle of the leaves that seemed to speak to her.

"Vrikshbaba", she asked, "What has happened here? Where is your companion the neem? Where are your many friends, the jamun and the mango trees?"

पेड़ के नीचे खड़े होकर उसने पत्तियों की सरसराहट सुनी। लगता था वह सरसराहट उसी से बात कर रही है।

"वृक्षबाबा", उसने पूछा, "यहाँ क्या हुआ है? तुम्हारा साथी नीम कहाँ है? और तुम्हारे बहुत सारे दोस्त—आम और जामुन के पेड़—कहाँ हैं?"

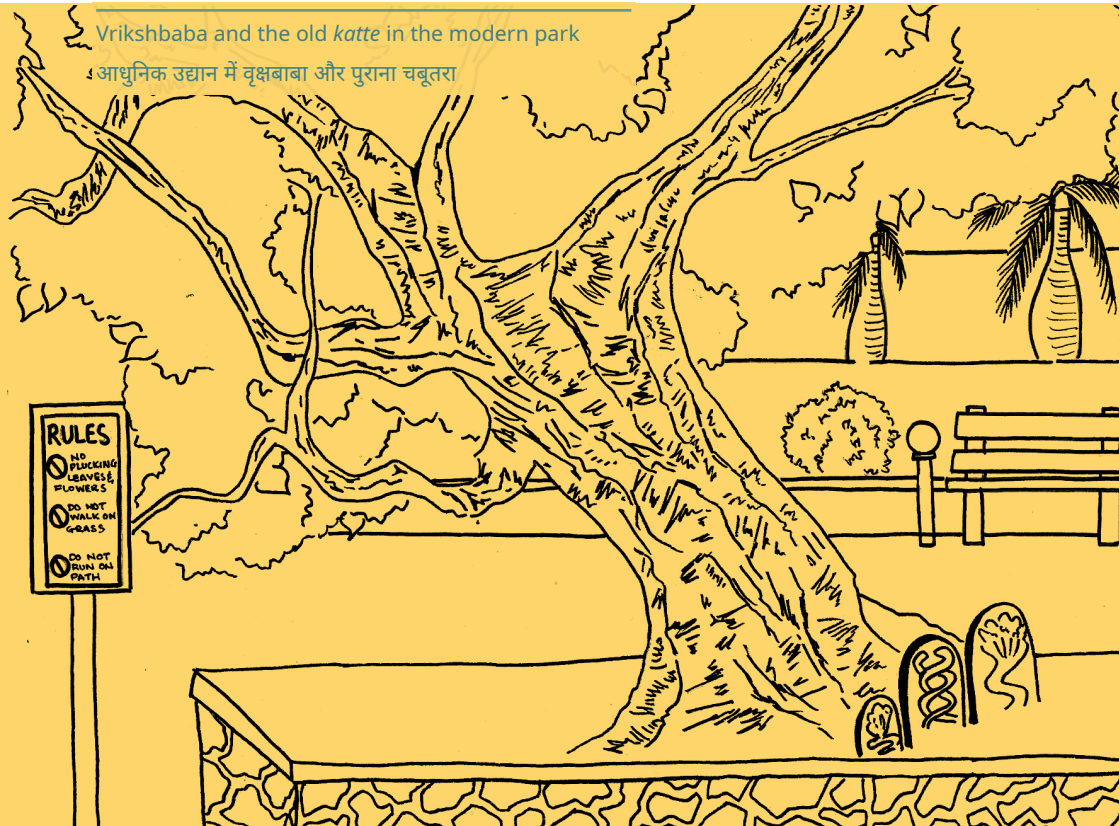

Vrikshbaba and the old *katte* in the modern park

आधुनिक उद्यान में वृक्षबाबा और पुराना चबूतरा

The rustle of the leaves became louder, and a soft and sad voice replied, “Who is this? Someone long ago used to call me by this name. I remember a young girl. But who are you?”

Lakshmi realised that Vrikshbaba had not recognised her. How would he? It had been a very long time.

She said, “Vrikshbaba, it is me, Lakshmi, the little girl who used to visit you every day with her goats. I am, of course, much older now.”

“Lakshmi!” Vrikshbaba exclaimed. “Is this really you? You have grown so big...and old. It has indeed been very long. It is good to see you. But yes, Lakshmi, all my old friends have gone.”

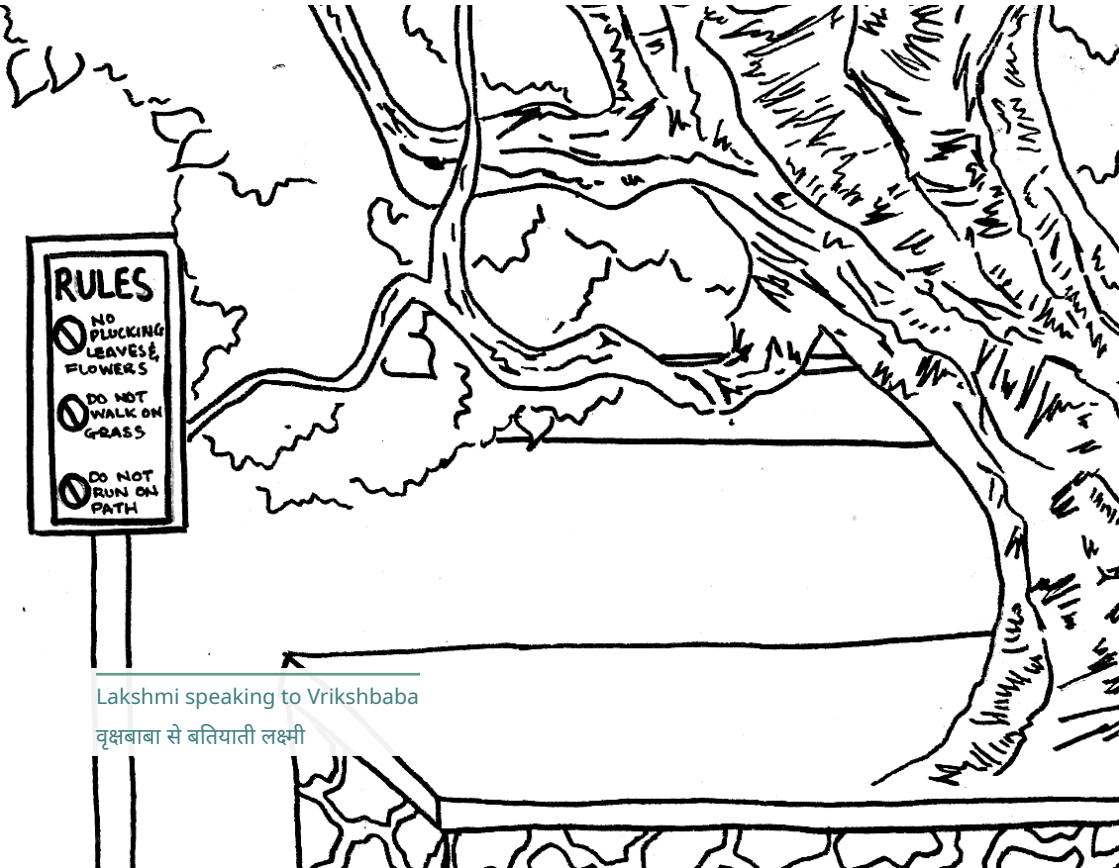

Lakshmi speaking to Vrikshbaba
वृक्षबाबा से बतियाती लक्ष्मी

पत्तियों की सरसराहट बढ़ गई, और एक वृद्ध आवाज़ ने जवाब दिया, “कौन है? बहुत समय पहले कोई मुझे इस नाम से पुकारता था। मुझे याद है एक छोटी बच्ची थी। पर तुम कौन हो?”

लक्ष्मी समझ गई कि वृक्षबाबा ने उसे नहीं पहचाना है। पहचानेगा भी कैसे? बहुत पहले की बात है न !

उसने कहा, “वृक्षबाबा, मैं हूँ लक्ष्मी, वही छोटी लड़की जो रोज़ाना अपनी बकरियाँ लेकर बातें करती थी। हाँ, अब मैं बड़ी ज़रूर हो गई हूँ।”

“लक्ष्मी!” वृक्षबाबा चहके। “सचमुच तुम हो? कितनी बड़ी हो गई हो...और बूढ़ी भी। सचमुच बहुत समय हो गया। तुम्हें देखकर बहुत अच्छा लग रहा है। लेकिन, लक्ष्मी, मेरे सारे पुराने साथी चले गए हैं।”

Lakshmi was worried at how sad Vrikshbaba sounded.

She said to Vrikshbaba, "It is good to see you too. While walking here I saw that so much has changed. I could hardly recognise our village anymore."

The village that Lakshmi grew up in was rather small, with less than fifty families living in it. The closest village seemed to be miles away. In addition to the *kalyani* she had walked past on her way to the *thope*, there was *ashwathkatte*[8] at the village centre. There were also wells and small ponds in different parts of the village, whose water was used for cooking, washing and bathing. Some of the wells were still there, but the ponds had been filled up long ago.

The village had a lake around which paddy, *ragi*[9] and vegetables were grown. The lake dried up in summer, leaving small slushy pools in the centre. Buffalos loved to wallow in these pools on hot summer days, while cows, sheep and goats came to the pools to quench their thirst.

When the lake filled up after the rains, children would go swimming, catching fish. Grass grew thick around the lake, and cattle were brought here to graze every day. Now, Lakshmi saw that the lake still existed, with some cattle grazing, but there was no sign of any cultivation—no rice, *ragi* or vegetables. The round stepwell near the lake held some water, but it looked dirty and stank. Empty bottles and plastic wrappers floated on the surface.

What Lakshmi remembered most fondly were the *gunda thopes*. Her village had four *thopes*. The one she stood in now had been her favourite. She wondered what had happened to the other *thopes*.

वृक्षबाबा की आवाज़ में मायूसी महसूस कर लक्ष्मी को चिन्ता हुई।

उसने वृक्षबाबा से कहा, “मुझे भी तुम्हें देखकर अच्छा लगा। यहाँ आते हुए रास्ते में मैंने देखा कि बहुत कुछ बदल गया है। मैं तो अपने गाँव को पहचान ही नहीं पाई।”

जिस गाँव में लक्ष्मी पली-बढ़ी थी, वह काफ़ी छोटा था। पचास से भी कम परिवार रहते थे वहाँ। सबसे पास का गाँव तो कोसों दूर लगता था। बावड़ी के अलावा वह वाटिका के क़रीब से भी गुज़री थी। गाँव के बीचोंबीच एक चौपाल थी। गाँव के अलग-अलग भागों में कुएँ और छोटे-छोटे तालाब थे। इनके पानी का उपयोग खाना पकाने और नहाने-धोने के लिए होता था। कुछ कुएँ तो अब भी थे लेकिन तालाब बहुत पहले भर दिए गए थे।

गाँव में एक झील थी, जिसके आसपास धान, रागी और सब्ज़ियाँ उगाई जाती थीं। झील गर्मियों में सूख जाती थी और बीच में कीचड़ के डबरे रह जाते थे। गर्मियों की तपती दोपहरी में भैंसें इन डबरों में पसरना पसन्द करती थीं। गायें, भेड़ें और बकरियाँ यहाँ प्यास बुझाने आती थीं।

बरसात के बाद जब झील भर जाती, तो बच्चे तैरते थे, मछलियाँ पकड़ते थे। झील के आसपास घनी घास उग आती थी जहाँ लोग मवेशियों को चराने लाते थे। लक्ष्मी ने देखा कि झील तो अभी भी है लेकिन खेती-बाड़ी का कोई निशान नहीं है—धान, रागी, सब्ज़ियाँ, कुछ नहीं। झील के पास की बावड़ी में थोड़ा पानी था लेकिन गन्दा और बदबूदार। खाली बोतलें और प्लास्टिक की पन्नियाँ पानी पर तैर रही थीं। लक्ष्मी की सबसे प्रिय याद वन-वाटिका की थी। उसके गाँव में चार वाटिकाएँ थीं। अभी वह जिसमें खड़ी थी, वह उसकी सबसे प्रिय थी। वह सोचने लगी कि बाकी वाटिकाओं का क्या हुआ होगा।

The village that Lakshmi remembered as a young girl—with the lake, agricultural fields and the step well

जिस गाँव को लक्ष्मी ने बचपन में देखा था—झील, खेत और बावड़ी के साथ

Crows bringing news to Vrikshbaba
वृक्षबाबा तक सन्देश लाते कौए

Vrikshbaba seemed to read her thoughts and said, “The other *thopes* have all gone; the crows told me about it. The trees were cut to set up a school and for building houses. Only one of the banyan trees still stands in the school compound.”

Lakshmi asked, “Where do the villagers now meet? For festivals and family occasions?”

लगता था वृक्षबाबा ने उसके मन की बात पढ़ ली थी। उसने कहा, “बाकी सारी वाटिकाएँ ख़त्म हो गईं; मुझे कौओं ने बताया था। स्कूल और मकान बनाने के लिए पेड़ काटे गए थे। केवल एक बरगद का पेड़ स्कूल के अहाते में बचा है।”

लक्ष्मी ने पूछा, “तो अब गाँव वाले कहाँ इकट्ठे होते हैं? त्यौहारों और पारिवारिक कार्यक्रमों के लिए?”

Vrikshbaba replied, “The last time the *Ramanavmi*[10] feast was held in this *thope* was nine years ago.”

Lakshmi was surprised. *Ramanavmi* was one of the festivals when the entire village would come together, cook a feast and share the meal, under the shade of the trees in the *thope*. Children played and climbed trees, while the elders talked under the shade. For as long as she could remember, the entire village celebrated *Ramanavmi* together. So she was surprised to hear that the festival was no longer held.

वृक्षबाबा ने जवाब दिया, “आख़िरी बार इस वाटिका में रामनवमी का त्यौहार नौ साल पहले हुआ था।”

लक्ष्मी चकित रह गई। रामनवमी एक ऐसा त्यौहार था जब पूरा गाँव इकट्ठा होता था, पकवान बनाते थे और मिलकर खाते थे, वन-वाटिका के पेड़ों की छाया में। बड़े लोग बैठकर गपशप करते, बच्चे खेलते और पेड़ों पर चढ़ते-उतरते थे। जहाँ तक उसे याद पड़ता था, गाँव के लोग रामनवमी मिलकर मनाते थे। उसे यह सुनकर आश्चर्य हुआ कि वह त्यौहार अब कोई नहीं मनाता।

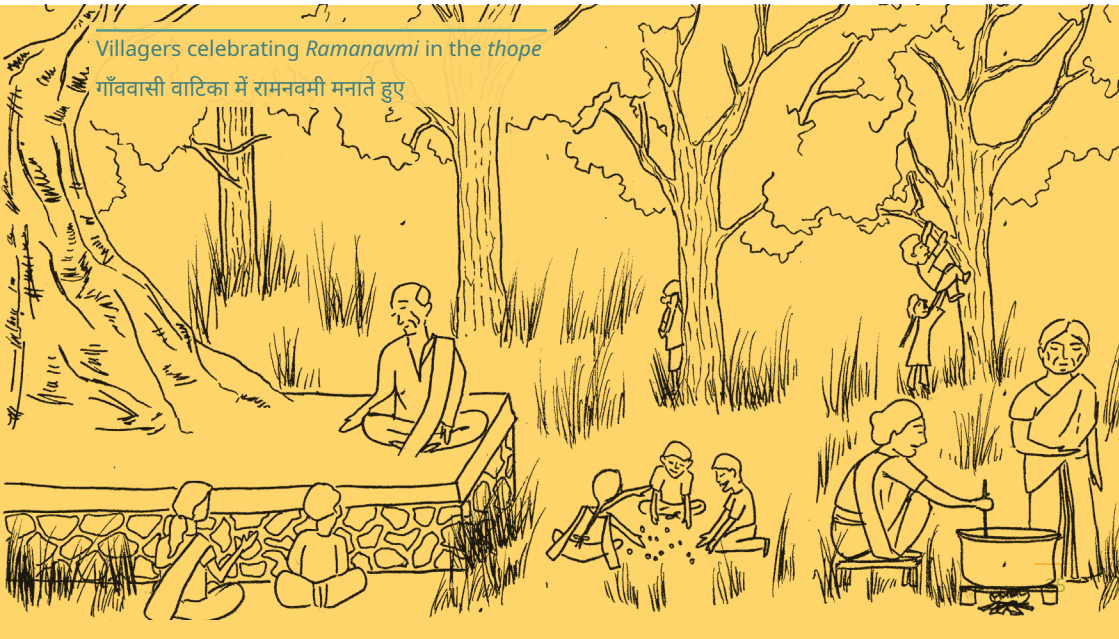

Villagers celebrating *Ramanavmi* in the *thope*

गाँववासी वाटिका में रामनवमी मनाते हुए

"What about the nomadic community that used to come and stay at this *thope* every year?" Lakshmi asked.

"Who? The fortune tellers? Oh, they stopped coming even earlier", said Vrikshbaba, "No one needs fortune tellers now. You can know all you want about your future through TV programmes."

Before she could say anything, Vrikshbaba continued, "No one comes here now like before. See, they have put a fence all around. Why people, even the birds and the bats, have stopped visiting the *thope*. They just fly overhead."

Lakshmi remembered the fruit trees well, especially the mango trees. She and her friends were often scolded for trying to climb the mango trees by the priest and village elders, as the trees in the *thope* were believed to be the abode of gods.

She also remembered the taste of the sour mangoes, brought down with a stone. And eaten with salt and chilli powder, that Lakshmi and her friends took with them when they brought their goats to graze at the *thope*.

Lakshmi looked at the *nagarkallus* in the shade of Vrikshbaba's canopy and asked, "They seem to have spared the *nagarkallus*. Do the women from the village still come here to pray?"

Vrikshbaba gave a sigh, his branches shaking, "Some of them still do. But not as often as before. I miss listening to their conversations. Now people come for exercise, walk briskly and leave. Some sit on the benches and talk for a while. But people can only enter for a few hours in the morning and evening. The gate is locked for the rest of the day."

“और उन घुमन्तू लोगों का क्या हुआ जो हर साल आकर यहाँ वाटिका में डेरा डालते थे?” लक्ष्मी ने पूछा।

“कौन, भविष्य बताने वाले? उनका आना तो उससे भी पहले बन्द हो गया था,” वृक्षबाबा ने कहा, “आजकल किसी को भविष्य बताने वालों की ज़रूरत नहीं है। सबको अपने भविष्य के बारे में सब कुछ टीवी कार्यक्रमों से पता चल जाता है।”

इससे पहले कि वह कुछ कह पाती, वृक्षबाबा ने कहा, “अब यहाँ पहले जैसे कोई नहीं आता। देखो उन्होंने चारों तरफ बागड़ लगा दी है। लोगों की छोड़ो, पक्षी और चमगादड़ भी अब यहाँ नहीं आते। वे ऊपर से ही उड़कर निकल जाते हैं।”

लक्ष्मी को फलों के पेड़ अच्छे से याद थे। ख़ास तौर से आम के पेड़। उसे और उसके दोस्तों को कई बार पुजारियों और गाँव के ज्येष्ठ ने आम के पेड़ों पर चढ़ने के लिए डाँटा था क्योंकि मान्यता है कि वाटिका के पेड़ों पर ईश्वर निवास करते हैं।

उसे खट्टे आमों यानी केरियों का स्वाद भी याद था, जो वे पत्थर मारकर गिराते थे। लक्ष्मी को वृक्षबाबा की छाया में साँप की मूर्तियों वाले पत्थर (नगरकल्लू) दिखे, तो उसने पूछा, “लगता है उन्होंने नगरकल्लू को बख़्श दिया। क्या गाँव की औरतें अभी भी यहाँ प्रार्थना करने आती हैं?”

वृक्षबाबा ने एक लंबी सास ली, उनकी शाखाएँ काँप उठीं, “हाँ, कुछ औरतें आती हैं। लेकिन पहले जितनी बार नहीं। मुझे उनकी बातें बहुत याद आती हैं। आजकल लोग व्यायाम करने को आते हैं, तेज़-तेज़ चलते हैं और चले जाते हैं। कुछ लोग बेन्चों पर बैठकर थोड़ी देर बतियाते हैं। लेकिन लोग वाटिका में सुबह और शाम कुछ ही घण्टों के लिए अन्दर आ सकते हैं। बाकी दिन गेट पर ताला रहता है।”

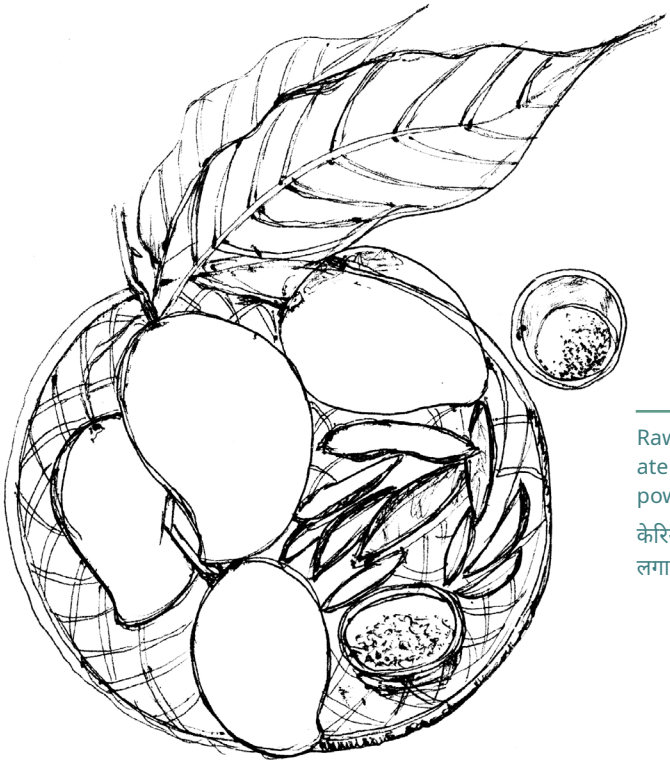

Raw mangoes that Lakshmi ate with salt and chilli powder

केरियाँ, जिन्हें लक्ष्मी नमक-मिर्च लगाकर खाया करती थी

"The afternoons are especially lonely, with no grazers resting here, no women coming to collect firewood or children climbing trees to pluck mangoes and jamun on their way back from school. Did you see the rules they have now—so many of them—about what you can do and not do in the *thope*?"

"दोपहर के समय ख़ास तौर से अकेलापन लगता है। अब कोई चरवाहा यहाँ नहीं सुस्ताता, कोई औरत लकड़ी बीनने नहीं आती और बच्चे स्कूल से लौटते हुए पेड़ों पर चढ़कर आम-जामुन नहीं तोड़ते। तुमने देखे यहाँ के नियम? इतने सारे नियम हैं कि तुम वाटिका में क्या कर सकते हो और क्या नहीं।"

Lakshmi was wondering how the *thopes* with their many trees, so special to the village, had come to this state.

She sat down on the *katte* and said, “Our village loved these *thopes* so much, and took such good care of the trees. The *thope* was also so useful—for the wood, fruits, for grazing. What happened to them, Vrikshbaba?”

लक्ष्मी सोचने लगी कि वाटिका के ऐसे हाल कैसे हो गए, जहाँ इतने सारे पेड़ होते थे और जो गाँव के लिए इतना महत्त्व रखते थे।

चबूतरे पर बैठकर वह बोली, “हमारा गाँव इन वाटिकाओं को कितना प्यार करता था और इनके पेड़ों का कितना ख़्याल रखता था। वाटिकाएँ बहुत उपयोगी भी थीं—लकड़ी, फल, चराई वगैरह के लिए। उन्हें क्या हुआ वृक्षबाबा?”

List of do’s and don’ts in the park
बगीचे में क्या करें, क्या न करें की सूची

The government school where one of the village *thopes* stood in the past

सरकारी स्कूल जहाँ अतीत में गाँव की एक वाटिका हुआ करती थी

PRIMARY AND MIDDLE SCHOOL
प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालय
CLEAN
GREEN

Vrikshbaba said, “Times have changed and with it people’s needs and thinking. It began with a storm, when one huge banyan tree fell in the *thope* where the school stands today. The people said that there was no use planting any new trees as there was a law saying that people could no longer cut trees or branches without permission from the government. They decided to build a school instead, on the same land.”

“When other trees fell in the *thopes* close to the school, the villagers decided to build houses in the space.”

Vrikshbaba continued, “Only this *thope* remained. And for a long time nothing happened. Then suddenly one day, there was a flurry of activity and many important looking people came to this *thope*. They spoke in loud voices and used chains to measure the land. A few days later, machines began to dig up the earth, and people came in to work on the land. I watched as a building came up in the corner where two large mango trees stood. A few more trees were cut and the veterinary hospital you see now was built.”

“No one objected? I know the *patel*[11] and *shanbogh*[12] are no longer responsible for village affairs. But what about the *panchayat*[13] and all the villagers?”, Lakshmi asked.

Lakshmi knew that in the past it was the patel and shanbogh who took decisions regarding the common lands in the village such as the *thope*, lake and *gomala*.[14]

वृक्षबाबा ने कहा, “समय बदल गया है और उसके साथ लोगों की ज़रूरतें भी और सोच भी। सब कुछ एक तूफ़ान के साथ शुरू हुआ था, जब वाटिका में बरगद का एक पेड़ गिर गया था, जहाँ आज स्कूल खड़ा है। लोगों का कहना था कि नए पेड़ लगाने का कोई मतलब नहीं है, क्योंकि एक नया बना क़ानून है जिसकी वजह से लोग सरकार की अनुमति के बिना पेड़ की टहनियाँ तक नहीं काट सकते। इसलिए उन्होंने तय किया उस ज़मीन पर स्कूल बनाया जाए।”

“जब स्कूल के पास अन्य पेड़ गिरे, तो लोगों ने ख़ाली हुई उस जगह पर भी मकान बनाने का निर्णय किया।”

वृक्षबाबा ने आगे बताया, “सिर्फ यही वाटिका बची। फिर काफ़ी समय तक कुछ नहीं हुआ। फिर अचानक एक दिन ज़ोर-शोर से गतिविधियाँ शुरू हो गईं और कई महत्त्वपूर्ण से दिखने वाले लोग इस वाटिका में आने-जाने लगे। वे ज़ोर-ज़ोर से बातें करते थे और ज़ंज़ीरों से ज़मीन नापते थे। कुछ दिन बाद मशीनों ने ज़मीन खोदना शुरू कर दिया और लोग यहाँ काम करने लगे। मैं देखता रहा कि एक कोने में, जहाँ आम के दो पेड़ खड़े थे, एक इमारत बनने लगी। कुछ और पेड़ काटे गए और पशु चिकित्सालय बन गया।”

लक्ष्मी ने पूछा, “किसी ने कुछ नहीं कहा? मैं जानती हूँ कि पटेल और पटवारी अब गाँव के मामलों के लिए ज़िम्मेदार नहीं हैं। लेकिन पंचायत और गाँव के बाकी लोगों ने क्या किया?”

लक्ष्मी जानती थी कि अतीत में पटेल और पटवारी मिलकर गाँव की सामूहिक ज़मीन, जैसे वाटिकाओं, झील और गोचर भूमि, के बारे में फ़ैसले किया करते थे।

Vrikshbaba telling Lakshmi about the changes to the *thope*

वृक्षबाबा वाटिका में हुए परिवर्तनों के बारे में लक्ष्मी को बताते हुए

In the past, in *thopes*, the practice was to plant a new tree whenever a tree fell. Villagers were not allowed to cut trees. Cutting branches was permitted, but only with the permission of the *patel* and *shanbogh*.

Lakshmi also knew that the *patel* and *shanbogh* were not always fair—their decisions sometimes gave preference to one person or a particular group. Still, this had been the system in the village, and had been accepted by all.

This old system was no longer in force. Now, the villages in the outskirts of Bengaluru had *panchayats* and those villages that had become a part of the city's municipality came under wards.[15]

Vrikshbaba said, "There was a lot of discussion. The villagers had many heated arguments. They decided that it would be nice if they could have a park in the village—like the ones localities in Bengaluru had. Our village is almost a part of Bengaluru today, and many go to work in the city. They saw the parks—neatly laid out, with exercise equipment, benches and lawns, and wanted something similar."

Lakshmi was thoughtful. She had seen a number of new houses and multi-storied apartments in her village, while walking towards the *thope*.

She said, "Yes, times have changed, and the people living here too have changed. Maybe that is why everyone wants a park now—for exercise. We had enough exercise grazing goats and climbing trees!"

अतीत में परम्परा यह थी कि वाटिका में कोई पेड़ गिर जाए तो उसकी जगह नया पेड़ लगाया जाता था। गाँववासियों को पेड़ काटने की अनुमति नहीं थी। टहनियाँ काटने की अनुमति थी, लेकिन पटेल और पटवारी से पूछकर।

लक्ष्मी को यह भी पता था कि पटेल और पटवारी हमेशा उचित काम नहीं करते थे। कभी-कभी उनके फ़ैसले किसी ख़ास समूह या व्यक्ति के पक्ष में होते थे। फिर भी गाँव में यही व्यवस्था थी और सबने इसे स्वीकार किया था।

यह पुरानी व्यवस्था अब लागू नहीं थी। अब बेंगलूरु के पड़ोस के गाँवों में पंचायतें थीं और जो गाँव शहर की नगर पालिका के हिस्से बन गए थे वे वार्डों में आते थे।

वृक्षबाबा ने कहा, “बहुत बहस हुई थी। गाँव के लोगों के बीच गर्मागरम वाद-विवाद हुए। उन्होंने तय किया कि गाँव में एक उद्यान होगा तो बहुत अच्छा रहेगा—जैसे बेंगलूरु की अन्य बस्तियों में हैं। हमारा गाँव अब लगभग बेंगलूरु का हिस्सा ही है। कई लोग शहर में काम करने भी जाते हैं। उन्होंने वहाँ उद्यान देखे हैं – सफ़ाई से डिज़ाइन किए गए, व्यायाम के उपकरण हैं, बेन्च और लॉन हैं। लोग वैसा ही कुछ चाहते थे।”

लक्ष्मी सोच में पड़ गई। वाटिका की ओर आते हुए उसने अपने गाँव में कई सारे नए मकान और बहुमंज़िला इमारतें देखी थीं।

उसने कहा, “हाँ, वक्त बदल गया है और यहाँ रहने वाले लोग भी बदल गए हैं। शायद इसीलिए अब सबको उद्यान चाहिए—व्यायाम करने के लिए। हमारा व्यायाम तो बकरियाँ चराते और पेड़ों पर चढ़ते-उतरते हो जाता था!”

Vrikshbaba bristled, and the peepul leaves shook even more. He said, "It's not just the new residents. Ask the children of families who have lived here for decades if they know what a *thope* is and where it was located? They say it was always a park! And the children and youth even ask—what is a *thope*?"

Vrikshbaba slowly calmed down. He said to Lakshmi, "I am glad you came to see me though, and still remembered the *thope*. I wish people would still plant and care for trees in this *thope* as they did in the past." Lakshmi thought sadly of her grandchildren, growing up in the city, in a crowded slum with no *thope* to run around in or trees to climb.

These thoughts still occupying her mind, Lakshmi suddenly realised that the sun was setting.

वृक्षबाबा सरसराया और पीपल की पत्तियाँ और ज़ोर से थरथराईं। उसने कहा, "बात सिर्फ़ नए बाशिन्दों की नहीं है। जो परिवार यहाँ दशकों पहले रहा करते थे, उनके बच्चों से पूछो कि क्या वे जानते हैं कि वाटिका क्या होती है और यह कहाँ थी? और तो और, बच्चे और युवा तो यह तक पूछते हैं—वाटिका क्या होती है?"

वृक्षबाबा धीरे-धीरे संभले। उसने लक्ष्मी से कहा, "मुझे ख़ुशी है कि तुम मुझसे मिलने आईं और तुम्हें आज तक वाटिकाएँ याद हैं। मैं कामना करता हूँ कि लोग उसी तरह वाटिका में पेड़ लगाकर उनकी देखभाल करेंगे जैसे पहले किया करते थे।"

लक्ष्मी ने मायूस होकर अपने पोते-पोतियों के बारे में सोचा जो शहर में एक भीड़भाड़ वाली झुग्गी बस्ती में रहकर बड़े हो रहे हैं, जहाँ दौड़-भाग करने को कोई वाटिका नहीं है, चढ़ने को कोई पेड़ नहीं है।

यही सब सोचते-सोचते अचानक उसे भान हुआ कि सूरज ढलने लगा है।

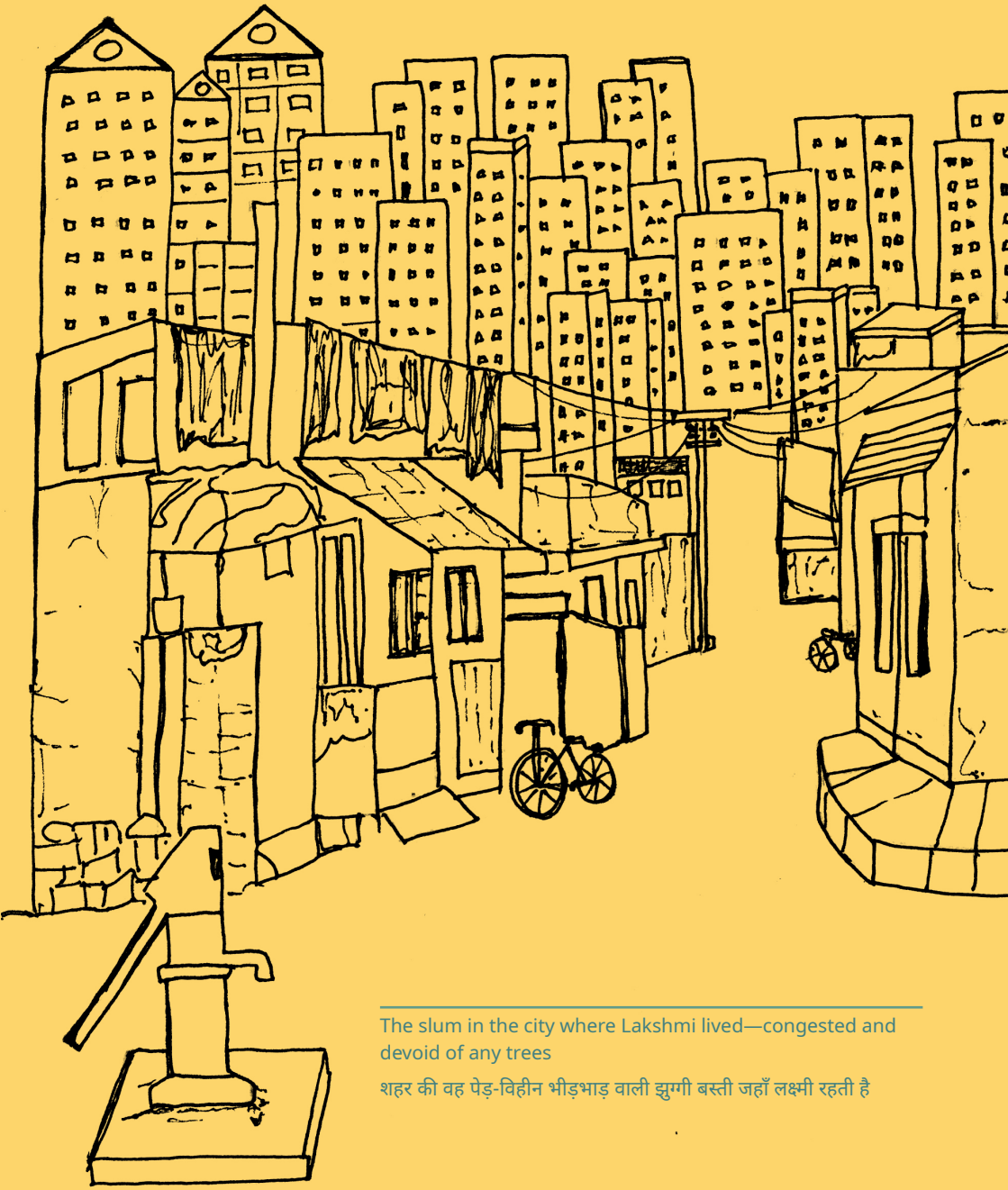

The slum in the city where Lakshmi lived—congested and devoid of any trees

शहर की वह पेड़-विहीन भीड़भाड़ वाली झुग्गी बस्ती जहाँ लक्ष्मी रहती है

She was alone in the park, except for a couple, walking briskly on the paved path—clearly in the middle of their evening exercise.

It was time for her to leave too. She had to go home, and return to the city the next day.

Lakshmi was filled with sadness.

She looked up at Vrikshbaba and said, "I have to go now. I don't know when I will see you again. I will ask my brother to plant a neem tree next to you, and I hope the tree will be a companion for you in the years to come. And I will pray at the *katte* near my house in the city that you will be protected and live long."

The leaves of the peepul seemed to stand still.

Vrikshbaba said, "Thank you Lakshmi for thinking of me. Do plant more trees as well in the city—in parks, schools, along roads, around lakes maybe? I am sure there are still some lakes in the city. I am so happy you came by to talk to me."

As the sun set, a few crows flew down onto the *katte*. A bat flitted among the leaves of the peepul, picking at the ripe figs. Lakshmi got up to leave. Walking back home through a very changed landscape, she knew that atleast tonight Vrikshbaba would not be alone—the crows that had come to roost would keep Vrikshbaba company.

वह उद्यान में अकेली थी, बस एक दम्पति और थे जो शाम का अपना व्यायाम कर रहे थे। उसे घर जाना होगा। अगले दिन शहर लौटना है।

लक्ष्मी उदास हो गई।

उसने वृक्षबाबा को देखकर कहा, "मुझे अब जाना होगा। नहीं जानती कि फिर कब आपको देखूँगी। मैं अपने भाई से कहूँगी कि आपके बाजू में एक नीम का पेड़ लगाए। उम्मीद करती हूँ कि वह पेड़ कई वर्षों तक आपका साथ निभाएगा। और मैं अपने घर के पास के चबूतरे पर प्रार्थना करूँगी कि आप सुरक्षित रहें और लम्बी उम्र पाएँ।"

पीपल की पत्तियाँ शान्त थीं।

वृक्षबाबा ने कहा, "शुक्रिया लक्ष्मी कि तुमने मेरे बारे में सोचा। शहर में भी पेड़ लगाना—बगीचों में, स्कूलों में, सड़क किनारे, झीलों के किनारे भी। मुझे यक़ीन है कि आज भी शहरों में कुछ झीलें हैं। मैं बहुत ख़ुश हूँ कि तुम मुझसे बात करने आईं।"

सूरज डूबने लगा। कुछ कौए आकर चबूतरे पर बैठ गए। एक चमगादड़ पीपल की पत्तियों के बीच फड़फड़ाया और पके हुए फल तोड़ ले गया। लक्ष्मी जाने को खड़ी हो गई।

बिलकुल बदले हुए परिदृश्य के बीच घर लौटते हुए, वह जानती थी कि कम से कम आज रात वृक्षबाबा अकेले नहीं होंगे —जो कौए वहाँ बसेरा बनाने को आए हैं, वे उनका साथ देंगे।

Vrikshbaba with the crows for company as the sun sets

सूर्यास्त के समय वृक्षबाबा के साथी कौए

What are *gunda thopes*?

Gunda thopes are wooded groves that were once found across villages in Karnataka. These groves used to be planted by local villagers with trees such as mango, jamun, peepul, banyan, *ippe*[16] and tamarind.

The *thopes* had many uses for the village community. The wood from the trees, especially of the mango, was used to make doors and window frames for village homes, and also to repair the temple. The poor in the village, who did not own land on which they could grow trees, were also allowed to use the branches as fuelwood for marriages and cremations. Wood from fallen trees, and tamarind were collected and auctioned, and the money collected was used to fund development work in the village.

The *thopes* were a shaded sanctuary for grazers and their livestock. After grazing and watering their animals in the lake, the grazers would herd their cows, goats or sheep to the thope. While the grazers dozed under the canopy, their animals would lazily nibble on the grass in the *thope*.

वन-वाटिकाएँ (गुण्डा थोप) क्या हैं?

वन-वाटिकाएँ पेड़ों के झुरमुट हैं जो किसी समय कर्नाटक के हर गाँव में पाए जाते थे। इन वाटिकाओं में स्थानीय लोग आम, जामुन, पीपल, बरगद, महुआ और इमली के पेड़ लगाते थे।

ग्राम समुदाय के लिए इन उपवनों के कई उपयोग थे। पेड़ों, ख़ास कर आम के पेड़ों, से मिली लकड़ी का उपयोग दरवाज़ों और खिड़कियों की चौखट बनाने में किया जाता था और मन्दिरों में मरम्मत के काम भी आती थी। गाँव के ग़रीब लोग, जिनके पास पेड़ लगाने के लिए ज़मीन नहीं होती थी, उन्हें शादी-विवाह और अन्तिम संस्कार में जलाऊ लकड़ी के लिए पेड़ों की शाखाओं का उपयोग करने की अनुमति होती थी। गिरे हुए पेड़ों की लकड़ी और इमली को इकट्ठा करके नीलाम किया जाता था। इससे प्राप्त धन का उपयोग गाँव के विकास कार्य में होता था।

वाटिकाएँ चरवाहों और उनके जानवरों के लिए छायादार आरामगाह भी थीं। अपने जानवरों को चराने और तालाब का पानी पिलाने के बाद चरवाहे अपनी गायों, भेड़-बकरियों को वाटिका में हाँक देते थे। चरवाहे पेड़ों की छाया में झपकी लेते और उनके जानवर वहाँ आराम से घास चरते रहते।

The fruits of the mango and jamun were like magnets, attracting children from the village. The children would climb the jamun trees to shake down the fruit that they ate till their tongues turned purple. They would aim and bring down the mangoes with stones, eating the raw mangoes with salt and chilli powder. Mangoes were also shared among the houses in the village, and pickle of different varieties were made and stored throughout the year. The villagers also collected seeds of the *ippe*, dried them and extracted oil to light lamps.

The villagers gathered for meetings and festivals at the *thopes*. Some *thopes* had small shrines and *nagarkallus* that were worshipped. Families also prayed to their household deity, represented in the form of stones placed at the base of the trees, anointed with turmeric and vermilion. Wandering nomadic fortune tellers set up temporary huts under the canopy of trees in the *thope*.

The *thope* was not just a place for people. Birds, animals, insects, and spiders could all be found on the trees and in the undergrowth. The cacophony of mynas and squirrels during the day, was replaced by the cawing crows that came to roost on the trees at dusk. Bats arrived later, with their high-pitched squealing, coming in for the night shift, to feast on insects and fruits.

Sadly, these *thopes* have now begun to disappear, especially in villages located close to cities such as Bengaluru. As a city grows and the population increases, the need for space also increases. As a result, *thopes* are converted to schools, houses, bus stands, community halls, and roads. Some *thopes* are being landscaped and converted to parks. What remains of the *thopes* are only a few trees.

आम और जामुन के फल तो बच्चों के लिए चुम्बक का काम करते थे। बच्चे जामुन के पेड़ पर चढ़कर हिला-हिलाकर फल गिराते और तब तक खाते रहते जब तक कि उनकी जीभ जामुनी न हो जाए। वे पत्थरों से निशाना लगाकर केरियाँ और आम गिराते और केरियाँ नमक-मिर्च लगाकर चट करते जाते। केरियाँ गाँव के घर-घर में भी बाँटी जाती थीं। उनसे तरह-तरह के अचार बनाकर साल भर के लिए रखे जाते थे। गाँव के लोग महुआ के बीज भी इकट्ठे करके उन्हें सुखाकर दीयों के लिए तेल निकालते थे।

गाँव के लोग बैठकों और त्यौहारों के लिए वाटिकाओं में इकट्ठा होते थे। कुछ वाटिकाओं में छोटे-छोटे मन्दिर और पत्थर की मूर्तियाँ भी होती थीं जिनकी पूजा की जाती थी। परिवार अपने कुल देवता/देवी की आराधना भी करते थे। ये कुलदेवता/देवी पेड़ के नीचे पत्थर पर हल्दी व सिन्दूर का श्रंगार करके रखे जाते थे। ख़ानाबदोश ज्योतिष वाटिका के पेड़ों की छाया में अस्थायी झोंपड़ी बनाकर रहते थे।

वाटिका सिर्फ़ लोगों के लिए जगह नहीं हुआ करती थी। पेड़ों और पेड़ के नीचे उगी वनस्पतियों पर पक्षी, जानवर, कीट और मकड़ियाँ भी बसेरा करते थे। दिन के समय मैना और गिलहरियों के शोर का स्थान शाम के समय कौओं की काँव-काँव ले लेती थी। चमगादड़ थोड़ी देर से आते थे। रात पाली में वे ऊँची आवाज़ में चीं-चीं करते कीटों और फलों की दावत उड़ाते। बदक़िस्मती से ये वाटिकाएँ अब लुप्त होने लगी हैं। ख़ास तौर से बेंगलूरु जैसे शहरों के आसपास के गाँवों में। जैसे-जैसे शहर बड़ा होता है और आबादी बढ़ती है, जगह की ज़रूरत भी बढ़ती है। परिणामस्वरूप, वाटिकाओं को स्कूलों, मकानों, बस स्टैण्डों, सामुदायिक भवनों और सड़कों में तबदील कर दिया जाता है। कुछ वाटिकाओं को समतल करके उद्यानों में बदला जा रहा है। वाटिका के अवशेष मात्र कुछ पेड़ों के रूप में शेष रह जाते हैं।

The *thopes* that the village took care of as a community now look degraded and uncared for, with hardly any trees left. Garbage and construction debris is dumped in and around the *thopes*. Even more saddening is the way in which the *thopes* seem to have faded from the memory of people.

Our cities are fast losing their tree cover. But we need to preserve the *thopes* with their trees in cities—for the grazers to bring their cattle, for children to climb and relish the fruit, and for the elderly to have a quiet place to walk and meet. As our cities become hotter, *thopes* provide much-needed shade and respite from heat. Trees help settle dust and absorb polluting gases which we otherwise end up breathing.

What can we do to protect these *thopes* and the trees that are so important?

We could start by getting to know more about the trees around us. We should also see where we can plant trees in our cities, and how we can care for them. We need to cherish trees—not just because they are useful to us—but because a city with its canopies is a part of an imagination for a better life, a beautiful and inspiring sight in an otherwise drab, grey and polluted city landscape.

जिन वाटिकाओं की देखभाल गाँव एक समुदाय के रूप में करता था, आज वे बरबाद और उपेक्षा के शिकार नज़र आते हैं, जहाँ बहुत थोड़े से पेड़ बचे हैं। कचरा और निर्माण का मलबा वाटिकाओं व उनके आस-पास की जगहों पर डाला जाता है। इससे भी ज़्यादा दुख की बात तो यह है कि वाटिकाएँ आज लोगों की स्मृतियों में भी धुँधली पड़ गई हैं।

हमारे शहरों में वृक्षाच्छादन तेज़ी से कम हो रहा है। लेकिन हमारे लिए शहरों में वाटिकाओं को उनके वृक्षों के साथ बचाना ज़रूरी है – जहाँ चरवाहे अपने मवेशियों को ला सकें, बच्चे पेड़ों पर चढ़ सकें, फलों का मज़ा ले सकें, बुज़ुर्ग शान्ति से घूम-फिर सकें, मेल-मुलाक़ात कर सकें। जैसे-जैसे हमारे शहर गर्म हो रहे हैं, ये वाटिकाएँ छाया प्रदान करती हैं, गर्मी से राहत देती हैं। पेड़ धूल को बैठाने में मदद करते हैं और प्रदूषक गैसों को सोखते हैं। अन्यथा ये हमारी शरीर में जाएँगे।

हम इन महत्त्वपूर्ण वाटिकाओं और पेड़ों का बचाने के लिए क्या कर सकते हैं? शुरुआत हम अपने आस-पास पेड़ों के बारे में ज़्यादा जानकर सकते हैं। हमें यह भी तलाश करना चाहिए हम अपने शहरों में पेड़ कहाँ लगा सकते हैं, और कैसे उनकी देखभाल कर सकते हैं। हमें पेड़ों का ख़्याल सिर्फ़ इसलिए नहीं करना चाहिए कि वे उपयोगी हैं बल्कि इसलिए भी कि उनका मण्डप एक बेहतर जीवन की कल्पना का हिस्सा है, वे एक धूसर, प्रदूषित, बोझिल शहरी परिदृश्य के विपरीत एक सुन्दर और उत्साहजनक नज़ारा पेश करते हैं।

Endnotes

1. A small square pond found usually near temples
एक छोटी चौकोर बावड़ी, जो आमतौर पर मन्दिर के पास पाई जाती है।

2. Wooded grove
वन-वाटिका

3. The part of the lake where the water overflows into the channel that connects to the lake downstream
कोडी : झील का वह भाग जहाँ से पानी बहकर नीचे की ओर जाता है।

4. A traditional game played using five stones
पाँचे : पाँच पत्थरों से खेले जाने वाला एक परम्परागत खेल।

5. Calotropis
अकाव

6. Raised platform
चबूतरा

7. Stones carved with images of snakes and worshipped especially by women
पत्थर की शिलाएँ, जिन पर सर्प की आकृतियाँ चित्रित होती हैं। इनकी पूजा,ख़ास कर महिलाओं द्वारा, की जाती है।

8. A raised platform with a peepul and neem tree
पीपल और नीम के साथ चबूतरा।

9. Finger millet
रागी

10. A festival to celebrate the birth of Rama, the Hindu god
रामनवमी का त्यौहार, जो भगवान राम के जन्मदिन के तौर पर मनाया जाता है।

11. Headman who was one of the main decision makers in the village in the past
पुराने समय में एक प्रमुख व्यक्ति जो गाँव के मुख्य निर्णय लेता था।

12. The new system of local self governance in the villages
पटवारी, जो गाँव में पंचायत के कामों में गाँव प्रधान की मदद करता है।

13. Accountant for the village who helped the headman in managing the village affairs

पंचायत राज यानी गाँव का स्थानीय स्व-प्रशासन

14. Grazing lands
चारागाह भूमि

15. Administrative division in a city
नगर पालिका

16. Indian butter fruit tree known as mahua
इंडियन बटर फ्रूट ट्री जिसे महुआ नाम से जाना जाता है।

Illustration Credits

All sketches included here were drawn by the students. However, to improve clarity, pencil drawings were traced with pen by those involved in booklet design.

Cover image by **Neeharika Verma**
Illustrations on pages 16, 17, 18-19, 24, 25, 30-31, 34-35 and 42-43 by **Neeharika Verma**
Illustrations on pages 8 and12-13 by **Sahana Subramanian**
Illustrations on pages 10-11, 22-23, 28, 29 and 39 by **Sukanya Basu**

चित्रों के लिए आभार

यहाँ शामिल सारे चित्र विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए हैं। मगर, स्पष्टता बढ़ाने के लिए पुस्तिका की डिज़ाइन से जुड़े लोगों ने पेंसिल चित्रों की पेन से ट्रेसिंग की है।

आवरण चित्र : **नीहारिका वर्मा**
पृष्ठ 16, 17, 18-19, 24, 25, 30-31, 34-35 और 42-43 के चित्र : **नीहारिका वर्मा**
पृष्ठ 8 तथा 12-13 के चित्र : **सहाना सुब्रमण्यन**
पृष्ठ 10-11, 22-23, 28,29 और 39 के चित्र : **सुकन्या बसु**

Acknowledgements

We thank the people of this unnamed village, one of our study sites, for sparing their time and sharing their experiences. We also thank Azim Premji University for supporting the research, and Manjunatha B for his invaluable assistance with field research.

आभार

हम इस अनाम गाँव के लोगों के शुक्रगुज़ार हैं कि उन्होंने हमें अपना समय दिया और अपने अनुभव साझा किए। इस अनुसंधान को समर्थन देने के लिए हम अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के भी आभारी हैं और मैदानी अनुसंधान में अमूल्य सहयोग के लिए मंजुनाथ बी के आभारी हैं।

अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय
बुरुगुंटे विलेज, सरजापुर होबली, अनेकल तालुक,
बिल्लापुरा ग्राम पंचायत, बेंगलूरु – 562125

080-66145136
www.azimpremjiuniversity.edu.in

Facebook: /azimpremjiuniversity **Instagram:** @azimpremjiuniv **Twitter:** @azimpremjiuniv